लैंगिक भेदभाव के प्रति संवेदनशील समझ बनाना

जय शेखर

एक शिक्षक ने अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को लिंग-आधारित भेदभाव के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए उनके साथ विषय-आधारित चुनिन्दा किताबों पर काम किया। वे जानना चाहते थे कि आज भी इस विषय पर विद्यार्थियों की सोच क्या है। वे कौन-सी प्रभावी युक्तियाँ हों कि किताबों की सहायता से उनके सोच-विचार को परिष्कृत किया जा सके, और यह भी जाना जा सके कि उनके किताब-आधारित प्रयासों का विद्यार्थियों के विचारों पर क्या और कितना असर हुआ है।

लैंगिक भेदभाव एक ऐसा मुद्दा है जिस पर हम विद्यार्थियों के बीच चर्चा नहीं करते, जबकि लिंग-आधारित भेदभाव हमारे इर्द-गिर्द हमेशा विद्यमान होता है। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे अपनी माँ की याद आती है जिन्होंने घर के सभी कामों में मुझे शामिल किया। मेरी कोई बहन नहीं है, इसलिए दादी के साथ मैंने दीवारों पर बड़े-बड़े माँडने, गोबर के देवता और खिलौने बनाना, ऊन से कढ़ाई करना, खाना बनाना, आदि घरेलू काम सीखे। कभी-कभी इसके लिए पारिवारिक उपहास का सामना भी करना पड़ा, लेकिन मेरा मनोबल कमज़ोर नहीं हुआ क्योंकि उन कौशलों को सीखने में मेरी रुचि थी।

आज जब अपने विद्यार्थियों से बात करता हूँ तब लगता है कि लिंग-आधारित भेदभाव से जुड़ी मान्यताओं ने उन्हें दृढ़ता से जकड़ रखा है। एक ओर जब लड़के इस बात की पैरवी करते हैं कि उन्हें लड़कियों वाले काम करने नहीं आते, न ही उन्हें करने चाहिए तो दूसरी ओर लड़कियाँ भी इसी तरह की सोच ज़ाहिर करती हैं। इसलिए लाज़िमी है कि इस विषय पर उनकी समझ बनाने में मदद की जाए। उन्हें ऐसी कहानियों से परिचित कराते हुए चर्चा और संवाद का अवसर दिया जाए, जिनसे सम्भव है कि उनके विचारों में खुलापन आए और नज़रिया विस्तृत हो।

चित्र 1 : परिवेश में जड़ें जमाए लैंगिक भेदभाव को प्रदर्शित करता एक पोस्टर

कहानियों के साथ अभ्यास के मुख्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों के बीच लिंग-आधारित असमानता / भेदभाव पर चर्चा करना और उनके विचार समझना;
2. विद्यार्थियों के साथ इस विषय से सम्बन्धित किताबें साझा करना और उन्हें सोचने, समझने एवं अपने विचारों को गढ़ने में मदद करना; और
3. किताबों के माध्यम से की गई बातचीत के उन पर हुए असर को समझना।

जिस समूह के साथ काम कर रहे हैं उसके बारे में

मेरे समूह में एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 5 में अध्ययनरत 15 से 20 विद्यार्थी शामिल हैं। सभी विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश के हैं। उनकी घर की भाषा हिन्दी या अवधी है, और माता-पिता बहुत कम पढ़े-लिखे हैं। पाठ्यपुस्तकों के अलावा किसी और प्रिंट सामग्री से उनका कोई जुड़ाव नहीं था, लेकिन पिछले कुछ समय से लगातार पुस्तकालय गतिविधियों में शामिल होने के कारण उन्होंने बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं, और उनकी समझ व रुचि विकसित हुई है।

विस्तृत प्रक्रिया

कविता और कहानी के नियमित सत्रों ने विद्यार्थियों को किताबों से परिचित कराया, इससे उनका किताबों के प्रति लगाव बढ़ने लगा। इशू कार्ड पर अपनी पढ़ी किताबें वे ख़ुद दर्ज करते हैं।

विद्यार्थियों के समूह के साथ जेंडर असमानता पर बातचीत करने की शुरुआत को लेकर एक अदृश्य डर था। मुझे लगा कि *न आसमान गिरा न चाँद बौखलाया* कहानी से बातचीत की शुरुआत करना उपयुक्त होगा। कहानी की पात्र जमुना घर के सभी कामों में शामिल होती है, लेकिन किसी एक मान्यता के कारण उसे चॉक छूने की मनाही है। कहानी के अन्त तक वह उस मान्यता को तोड़ देती है। मैंने यह समझने की कोशिश की कि हमारे परिवेश में ऐसी और कौन-सी मान्यताएँ तथा बन्दिशें हैं जो हमारी लैंगिक पहचान के कारण बनाई गई हैं। इसके लिए विद्यार्थियों को दो समूह में बैठाकर चर्चा शुरू की। इसमें कुछ बातें सामने आईं। जैसे—लड़कियों पर कुछ ख़ास कपड़े पहनने को लेकर, लड़कों के साथ खेलने, बिना नक़ाब लगाए बाज़ार जाने, दुकान पर सौदा छूने, आदि की बन्दिशें हैं। विद्यार्थियों ने खुलकर अपनी बातें कहीं।

अगले सत्र में उनके सामने फिर नया प्रश्न रखा कि वे कौन-से काम हैं जो सिर्फ़ लड़के या लड़कियों के लिए निर्धारित हैं। विद्यार्थियों ने एक सूची बनाई। इससे यह स्पष्ट होता है कि घर के कामों में अभी भी लड़कों को शामिल नहीं किया जाता जिससे उनमें पुरुष होने की भावना धीरे-धीरे प्रबल होने लगती है। यह लैंगिक विभेद की मुख्य वजह बनती है। विद्यार्थियों ने कहा कि घर में झाड़ू लगाना, कभी-कभार बर्तन साफ़ करना, कपड़े धोना या घर में साफ़-सफ़ाई करना, आदि काम तो लड़कियों के हैं। घरेलू कामों के अलावा बाज़ार के कोई भी काम करने पर लड़कियों के लिए रोक-टोक लगी हुई है।

मैंने एक नई किताब चुनी—*गुठली तो परी है*। इस कहानी की ख़ास बात यह है कि गुठली को घूमने का शौक़ है। फूल और फलों के बीज इकट्ठे करना, साइकिल चलाना, यह सब उसे पसन्द है। इसके लिए उसे कोई रोकता-टोकता भी नहीं है, लेकिन उसका एक शौक़ और भी है। वह अपनी बहन की फ़्रॉक पहनना चाहता है जिसके लिए उसके भाई-बहन और मम्मी-पापा राज़ी नहीं हैं। अब हमारी चर्चा का एक नया आयाम खुल रहा था जिसमें हम सिर्फ़ कामों पर लैंगिक असमानता की छाप नहीं, बल्कि अपने विचारों और अपनी पसन्द की चीज़ें चुनने की आज़ादी पर भी उसकी छाप ढूँढ़ने की कोशिश करने वाले थे। इसके लिए मैंने विद्यार्थियों को धीरे-धीरे किताब पढ़कर सुनाई, और समझने की कोशिश की कि उन्हें गुठली का व्यवहार कैसा लगा। क्या सच में गुठली को फ़्रॉक पहननी चाहिए थी? या उसकी माँ को उसकी मदद करनी चाहिए थी? विद्यार्थियों को यही लग रहा था कि गुठली के फ़्रॉक पहनने का व्यवहार ठीक नहीं है।

सिर्फ़ बातचीत करते रहने से पुस्तकालय का माहौल बहुत सक्रिय और सजीव नहीं बन पाता है, इसीलिए मैंने इसमें दो गतिविधियाँ शामिल कीं। पहली, वे विद्यार्थी जो ठीक से लिख लेते हैं, उनको कहानी में शामिल पाँच पात्रों में से किसी एक को पत्र लिखना था, वहीं जो लिखने में सहज नहीं थे, उनको गुठली के लिए किसी एक उपहार का चित्र बनाना था। इसके साथ ही, वह उपहार गुठली को क्यों देना चाहते थे, इस बारे में उन्हें एक-दो पंक्तियाँ लिखनी थीं।

विद्यार्थियों द्वारा गुठली को, उसकी माँ, उसके पिता, उसके भाई और उसकी बहन को पत्र लिखे गए।

विद्यार्थियों ने जो सोचा और लिखा—

- अयान ने गुठली के पिता को पत्र में लिखा कि उन्हें गुठली को समझाना चाहिए कि वह लड़का है और वैसा ही रहे, जबकि अरविन्द ने उन्हें आज़ादी से रहने की बातें लिखीं। मुझे समझ में आया कि विद्यार्थियों के क्या पूर्वाग्रह हैं, और सामान्यतः वे क्या सोच रहे हैं।
- अरविन्द ने पत्र की अन्तिम पंक्तियों में लिखा, "अगर आज उसे कपड़ों के लिए रोकेंगे तो कल को नई-नई पाबन्दियाँ लगाते जाएँगे, तब गुठली कभी भी आज़ादी को नहीं समझ पाएगा।"
- क्रान्ति ने गुठली की बहन को पत्र लिखकर समझाया, "अगर गुठली का सपना परी बनने का था, और तुम्हारी नई फ़्रॉक पहन ली थी तब तुम्हें गुठली को डाँटना नहीं चाहिए, क्योंकि वह तुमसे छोटा था। तुम्हें समझा देना चाहिए था। मैं तुम्हारी जगह होती तो गुठली को अपने कपड़े दे देती।"
- अरुण ने साइकिल बनाई, और लिखा कि गुठली को साइकिल पर घूमना पसन्द था, इसलिए उसे उपहार में साइकिल देगा।

> मुझे दिखा कि लड़कों और लड़कियों के खिलौनों में काफ़ी भिन्नता है। जहाँ लड़कियाँ गुड़ियों के खेल, टेडी बियर, किचन सेट, आदि से खेल रही थीं, लड़के क्रिकेट, हॉकी के अलावा रेसिंग कार, बन्दूक, आदि खिलौनों से ख़ुश थे।

चर्चा में शामिल विद्यार्थियों ने अपने तरीक़े से गुठली को समझा। इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य था कि विद्यार्थी गुठली पर अपनी समझ बना पाएँ, और ऐसे पात्र हमारी चिन्ता के विषय बनें।

गुठली की बात को आगे बढ़ाने के लिए, मैंने अब नेहा सिंह की लिखी एक नई कहानी 'प्रशांत भैया' चुनी। यह जनवरी 2025 में *प्लूटो* में प्रकाशित हुई थी।

कहानी पढ़ने से पूर्व मैंने सोचा कि इस बार विद्यार्थियों से उन खेल सामग्रियों की सूची बनवाई जाए जो वे खेलते हैं। मुझे दिखा कि लड़कों और लड़कियों के खिलौनों में काफ़ी भिन्नता है। जहाँ लड़कियाँ गुड़ियों के खेल, टेडी बियर, किचन सेट, आदि से खेल रही थीं, लड़के क्रिकेट, हॉकी के अलावा रेसिंग कार, बन्दूक, आदि खिलौनों से ख़ुश थे। प्रशांत भैया की कहानी कहीं-न-कहीं बच्चों की कहानी जैसी ही थी, क्योंकि वे भी डॉक्टर-मरीज़, टीचर-स्टूडेंट, घर-घर, आदि खेल खेलते हैं। इसी प्रकार, प्रशांत भैया को घर-घर का खेल खेलने में बहुत मज़ा आता था जो उनकी माँ को पसन्द नहीं था। माँ ने उनको कार लाकर दी जिस पर प्रशांत भैया ने फूल सजा दिए। यहाँ बात करने की काफ़ी गुंजाइश दिखी। मैंने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि प्रशांत भैया जो खेल 'घर-घर' खेल रहे थे, वह उनकी माँ को पसन्द क्यों नहीं आया? आप होते तो क्या सोचते? उन्होंने कार में फूल सजा दिए, क्या यह ठीक नहीं किया? विद्यार्थियों को पिछले दिनों की चर्चा के दौरान यह एहसास होने लगा था कि लैंगिक भेदभाव सतह पर भले न दिख रहा हो, पर वह गहराई के साथ मौजूद है। जब खेलों पर चर्चा हुई तो मुझे एहसास हुआ कि खेल का पक्ष भी इस विषय से अछूता नहीं रहा। कुछ विद्यार्थियों ने प्रशांत का समर्थन किया, पर कुछ अभी भी माँ के साथ थे।

'प्रशांत भैया' कहानी ने हमारी समझ की कई परतों को खोला। अभी तक मुझे भी ऐसा लगता था कि लैंगिक असमानता केवल कामकाज के स्तर पर ही है, लेकिन इस यात्रा ने मुझे समझने का मौक़ा दिया कि यह जीवन के हर एक पहलू में कहीं-न-कहीं गहराई से कार्य कर रही है। अभी तक हमने विद्यार्थियों से व्यवहार, कपड़ों, पसन्द, खेलों के इर्द-गिर्द चर्चा की, और वे इस विषय का अर्थ समझने लगे।

मुझे नेहा सिंह की एक और कहानी मिली 'सुपर हीरो आद्या' जो *साइकिल* में प्रकाशित हुई थी। कहानी में आद्या सिंगापुर के विद्यालय में पढ़ती है। वह कई स्तरों पर लैंगिक असमानता का सामना करती है, और अपने विरोध का स्वर भी मज़बूती के साथ विद्यालय में रखती है। विद्यार्थियों को आद्या के विचार, उसकी माँ की मदद और वे सभी ज़रूरी मुद्दे, जो कहानी में शामिल थे, समझ आए। अगले दिन कहानी पर चर्चा के दौरान विद्यार्थियों से उन कामों की सूची बनाने को कहा जो लड़कियों के लिए माने जाते हैं, लेकिन रोज़गार के लिए लड़कों ने अपना लिए हैं। इसी प्रकार, उन कार्यों की भी सूची बनानी थी जो लड़कियों को नहीं करने दिए जाते थे, लेकिन आज लड़कियों ने उन्हें आजीविका की तरह अपना लिया है। सूची बनने के बाद गतिविधि में रोचकता के लिए विद्यार्थियों को उन कार्यों के चित्र बनाने का

चित्र 2 : लैंगिक आधार पर कामों का विभाजन देखकर ही विद्यार्थी भी अपना मत बनाते हैं, चित्र में उसका प्रदर्शन

भी मौक़ा दिया। (चित्र 1) चित्र बनाते समय विद्यार्थी बहुत कुछ बना व कह रहे होते हैं। जब उनसे पूछा कि लड़कों को किस काम को करने के लिए रोका जाता है। मुख़्तार ने जवाब दिया कि लड़कों को रोका नहीं जाता, बल्कि उन्हें चिढ़ाते हैं कि 'यह मेहरा है'। हम लोगों ने कुछ टैगलाइन बनाईं। उनमें लिखा कि 'लड़के चिढ़ाए जाते हैं जब वे आटे से खेलते हैं' आदि, और 'लड़कियाँ रोकी जाती हैं जब वे सपने देखती हैं' आदि।

> **आवाज़ के उतार-चढ़ाव और हल्के संगीत के साथ प्रस्तुत यह कहानी विद्यार्थियों को काफ़ी अच्छी लगी। कहानी का नाम है मितवा। इस कहानी को चुनने का उद्देश्य इस धारणा को तोड़ना था कि कुछ काम लड़कियाँ कर ही नहीं सकतीं।**

अगले सत्र में कक्षा को दो समूहों में बाँटा गया। विषय रखा गया कि एक समूह अपने पिता द्वारा, उनके व्यवसाय के अतिरिक्त, दिन भर किए गए कार्यों की सूची बनाएगा, और दूसरा समूह अपनी माँ के कार्यों की सूची बनाएगा। फिर सभी उनके चित्र भी बनाएँगे। इस गतिविधि से यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि बड़े हो जाने पर भी जेंडर-आधारित कार्य के बँटवारे बने हुए हैं अथवा नहीं। हमें ज्ञात हुआ कि कुछ सामान्य कार्यों के अलावा शोएब की माँ बकरी चराने भी जाती हैं, मुख़्तार की माँ मछली काटती और पकाती हैं, और किसी की माँ तो दूसरों के घरों में बर्तन, झाड़ू, साफ़-सफ़ाई के काम भी करती हैं। बच्चों को पालने के अलावा किसी की माँ लकड़ी बीनकर भी ला रही थी जिसे उन्होंने चित्र में भी प्रदर्शित किया।

पिछले दिनों की बातचीत से विद्यार्थियों की समझ अभी इस स्तर पर पहुँची है कि जिस लैंगिक असमानता को वे समझ रहे हैं और महसूस कर रहे हैं, वह काम के बँटवारे को लेकर है, और शायद बड़े होने पर यह बँटवारा धूमिल हो जाएगा। इस बात की पूरी गुंजाइश है कि धीरे-धीरे वे इस बात को भी समझेंगे कि बड़े होने पर भी यह असमानता किस तरह मौजूद रहती है।

यह चर्चा और गतिविधि बेहद उत्साहजनक रही। इस दौरान विद्यार्थियों ने स्वयं यह प्रश्न खड़ा किया कि बड़े होने पर तो सारे काम हमें करने पड़ते हैं तो बच्चों को ही क्यों रोका-टोका जाता है कुछ विशेष कामों के लिए? विद्यार्थियों के कामों का डिस्प्ले पोस्टर बनाना बहुत रोमांचक रहा।

पिछली सभी कहानियों का परिचय रीड अलाउड के माध्यम से हुआ। इस बार एक नई कहानी की ऑडियो प्रस्तुति कक्षा में की। आवाज़ के उतार-चढ़ाव और हल्के संगीत के साथ प्रस्तुत यह कहानी विद्यार्थियों को काफ़ी अच्छी लगी। कहानी का नाम है *मितवा*। इस कहानी को चुनने का उद्देश्य इस धारणा को तोड़ना था कि कुछ काम लड़कियाँ कर ही नहीं सकतीं।

कहानी को बार-बार सुनते वक़्त उन पंक्तियों को ढूँढ़ा जिनमें जेंडर-आधारित असमानता की कोई बात महसूस होती। हमें ऐसे 10 वाक्य मिले।

इसके साथ ही हमने मितवा के चित्र भी बनाए। चित्रों में मितवा का पूरा परिवार खेत पर काम करता हुआ दिखा। किसी चित्र में मितवा साइकिल और ट्रैक्टर चलाते हुए भी दिखाई पड़ी। यदि हमने इतने दिनों तक इस विषय पर चर्चा नहीं की होती तो चित्रों में ये बातें नहीं आतीं।

इस प्रक्रिया से हासिल परिणामों की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

1. **सोच को बदलते देखा :** मैंने देखा कि किताबों के साथ गुज़रते वही विद्यार्थी, जो शुरुआती दौर में *गुठली तो परी है* कहानी के दौरान माता-पिता के साथ थे, 'प्रशांत भैया' वाली कहानी तक पहुँचकर गुठली के साथ हो गए।
2. **जीवन में उतरते दिखे नए विचार :** जो नए विचार गढ़े गए वे जीवन में भी उतरते हुए दिखाई देने लगे। जैसे कि मुख़्तार के घर में शादी थी। उसने अपनी हथेली में मेहँदी

चित्र 3 : खेती के काम में बराबरी की भागीदारी दिखाता एक चित्र

की डिज़ाइन बनाई और अपने मित्रों के नाम लिखे। विद्यालय आने पर किसी ने भी उसे विशेष रूप से चिढ़ाया नहीं।

3. **मिलजुलकर काम करने की भावना का विकास** : कविता के पोस्टर बनाते समय पहले लड़के और लड़कियाँ मिलकर कोई काम नहीं करते थे, लेकिन इस बार टीम में लड़के और लड़कियों ने बिना किसी संकोच के मिलकर अपने काम सहजता से पूरे किए।

4. **नई समझ की तरफ़ बढ़ना** : मैं हिन्दी से अँग्रेज़ी और संस्कृत में अनुवाद पढ़ा रहा था। उस दौरान बोर्ड पर जब सीता लिखा तो एक विद्यार्थी ने वाक्य पूरा करते हुए कहा, "सर, सीता पढ़ रही है!" जबकि एक अन्य लड़की ने जब वही घिसा-पिटा वाक्य बोला कि सीता खाना पकाती है, कक्षा में ही स्वर उठे कि यहाँ भी सीता खाना ही पकाती रहेगी क्या। उसे पढ़ने दो, मितवा की तरह!

5. **कक्षा की बैठक व्यवस्था** : पहले कक्षा में लड़कियाँ एक तरफ़ और लड़के दूसरी तरफ़ बैठते थे, लेकिन अब वे किसी भी अवसर पर एक साथ बिना संकोच के बैठ जाते हैं।

पुस्तकालय की अहमियत

जेंडर असमानता जैसे गम्भीर मुद्दों पर ठोस चर्चा करने के लिए सन्दर्भ-उपयुक्त कहानी और किताबें सबसे ज़्यादा मददगार होती हैं। यदि हमारे पुस्तकालय में इन विषयों पर किताबें उपलब्ध हों, तब यह काम काफ़ी आसानी से होने लगता है। उक्त विषय पर 20 से 25 सत्र करने पर मैंने पुस्तकालय गतिविधियों में विविधता पर भी विशेष ध्यान दिया। इससे विद्यार्थियों की रुचि बनी रही, और उन्हें अपनी बातें खुलकर कहने का मौक़ा मिला। इस प्रकार, पुस्तकालय समूह चर्चा करने, एक दूसरे के विचारों को सुनने-समझने, और अपने विचारों को आकार देने का भी अवसर देता है। शिक्षक के तौर पर मैंने यह महसूस किया कि किसी भी जटिल विषय पर विद्यार्थियों के बीच समझ बनाने में उनकी बातों को धैर्यपूर्वक सुनना बहुत ही ज़रूरी है। साथ ही, उनको सोचने और समझने का पूरा अवसर मिलना चाहिए। शिक्षकों को अपने विचार विद्यार्थियों पर थोपने नहीं चाहिए, अपितु उन्हें धीरे-धीरे ख़ुद के विचार बनाने का मौक़ा देना चाहिए। शिक्षक जितनी संवेदनशीलता और निष्पक्षता से किसी बात को विद्यार्थियों के बीच लेकर जाते हैं, उतनी ही स्पष्टता से वे अपने विचार बनाते हैं।

> विद्यार्थी ने वाक्य पूरा करते हुए कहा, "सर, सीता पढ़ रही है!" जबकि एक अन्य लड़की ने जब वही घिसा-पिटा वाक्य बोला कि सीता खाना पकाती है, कक्षा में ही स्वर उठे कि यहाँ भी सीता खाना ही पकाती रहेगी क्या। उसे पढ़ने दो, मितवा की तरह !

जय शेखर कम्पोज़िट विद्यालय धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश में शिक्षक हैं। उन्हें उत्कृष्ट शैक्षिक कार्यों के लिए कई सरकारी व प्रतिष्ठित स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित किया गया है। वे एससीईआरटी उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों के लेखन मण्डल में शामिल रहे हैं।

सम्पर्क : jaishekhar21@gmail.com